Educational Administration: Theory and Practice
2024, 30(6), 5342-5347
ISSN: 2148-2403
https://kuey.net/

Research Article

Establishment Of Mewar By Bappa Rawal: A Historical Analysis

Reena Kumari[1*], Dr. Dilawar Nabi Bhat[2]

[1*]Research Scholar, Department of History, Nims University, Rajasthan, Jaipur
[2]Assistant Professor, Department of History, NIims University, Rajasthan, Jaipur

Citation: Reena Kumari, et.al (2024). Establishment Of Mewar By Bappa Rawal: A Historical Analysis, *Educational Administration: Theory and Practice*, 30(6) 5342-5347
Doi: 10.53555/kuey.v30i6.10703

ARTICLE INFO

ABSTRACT

The rise of Bappa Rawal and his establishment of Mewar in the 8th century constitute a defining moment in the political and cultural history of Rajputana. This research paper seeks to critically analyze the historical circumstances that facilitated Bappa Rawal's emergence as a powerful leader, particularly his conquest of Chittorgarh and the subsequent foundation of the Mewar polity. Drawing upon literary sources, inscriptions, and regional traditions, the paper explores the political vacuum created by the decline of earlier dynasties, the role of local alliances, and the integration of warrior groups that enabled Bappa Rawal to consolidate authority. Special attention is given to his military strategies, ranging from fortification and defensive warfare to diplomatic alliances with neighboring powers, that ensured the stability of the newly founded kingdom. The analysis also highlights the symbolic and ideological significance of Bappa Rawal's rule, which not only safeguarded Mewar against external incursions, particularly from Arab invaders, but also laid down the foundational ethos of Rajput valor, kinship solidarity, and political autonomy. In doing so, the research situates Bappa Rawal's legacy within the broader trajectory of medieval Indian state formation and underscores his role in shaping the identity and resilience of Rajput polities in the centuries that followed.

Keywords: Bappa Rawal, Mewar, Rajputana, Chittorgarh, State formation, Military strategy

परिचय

मेवाड़ राजवंश के सबसे शक्तिशाली और प्रसिद्ध राजाओं में से एक बप्पा रावल थे। बप्पा को गुहिलोत वंश के राजाओं में "चंद्रमा" के रूप में वर्णित किया गया है।[1]गुहिलोत वंश के जीवित वंशज होने के बावजूद, अत्रि वंश से संबंधित राजकुमार कालभोज (उनका असली नाम) ने सिंहासन पर बैठने के बाद सात पीढ़ियों से इस्तेमाल किए जाने वाले पारिवारिक नाम को नहीं अपनाया। इसके बजाय, उन्होंने मेवाड़ राजवंश की स्थापना की और इसे नए अधिग्रहीत देश का नाम दिया। बाद में वे कई युद्धक्षेत्रों में एक प्रिय नायक के रूप में प्रमुखता से उभरे, लेकिन उनका पेचीदा जीवन रहस्यों से भरा है, और उनके बारे में कई कहानियाँ प्रचलित हैं। किंवदंती के अनुसार, बप्पा को मेवाड़ क्षेत्र के एक ऋषि हरित ऋषि से राज्य प्राप्त हुआ था।[2]बप्पा के बारे में यह भी कहा जाता है कि उन्होंने ब्रह्मा जैसे ऋषि से क्षत्रिय का तेज प्राप्त किया और बदले में ऋषि को अपनी भक्ति, अपना ब्राह्मण तेज दिया। इस प्रकार गुहिलों की क्षत्रिय भूमिका को वैधता प्रदान की गई। इसलिए बप्पा को दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी के अभिलेखों के गुहादत्त के साधारण ब्राह्मण मूल के बजाय ब्रह्म-क्षत्र का प्रतिष्ठित दर्जा दिया गया है। चित्तौड़ की विजय के साथ, नागदा-आहड़ गुहिलों ने ऊपरी बनास के मैदान को अपने मौजूदा क्षेत्रों में सफलतापूर्वक एकीकृत करने में सक्षम थे और इस प्रकार मेवाड़ के पूरे क्षेत्र पर शासन किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि चित्तौड़ को मेवाड़ की पहाड़ियों में जोड़ने से राज्य में अतिरिक्त संसाधन आए, जैसा कि चित्तौड़गढ़ के पास स्थित तलहट्टी, खोहर और सज्जनपुरा के कस्टम-हाउस से ड्रामों के अनुदान के उल्लेख से स्पष्ट है। इस स्तर पर अपने आधिकारिक

[1]*रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ़ मेवाड़ फ्रॉम अर्लीस्ट टाइम टू 1751 ए डी, 30 मार्च, 1976, शांतिदेवी मातेश्वरी प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 41।
[2]माथुर, एम.एम. "शानदार मेवाड़।"डेक्कन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट का बुलेटिन, खंड 68/69, 2008, पृष्ठ 277-92। JSTOR, http://www.jstor.org/stable/42931212. 12 सितंबर 2024 को एक्सेस किया गया।

Copyright © 2024 by Author/s and Licensed by Kuey. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.

अभिलेखों में प्रतिष्ठित मूल और स्थानीय जड़ों का दावा करने से यह तथ्य पता चलता है कि इतिहास में यह वह समय था जब मेवाड़ क्षेत्र ने नागदा-अहाड़ गुहिला के साथ अपनी पहचान बनाई थी।[3]उनके पिता रावल महेंद्र द्वितीय ने चंद्रावती या माउंट आबू की एक परमार राजपूत महिला से विवाह किया, जो उस समय परमारों का केंद्र था। वह परमार लोगों के शासक और मेवाड़ साम्राज्य के एक महत्वपूर्ण हिस्से मान मोरी से भी संबंधित थी। इसमें गुहिला राजवंश का क्षेत्र शामिल था, जिस पर एक सदी पहले मालवा के परमार आक्रमणकारियों ने कब्जा कर लिया था। उन्होंने चित्तौड़गढ़ के प्रतिष्ठित गढ़ में अपनी राजधानी स्थापित की। किंवदंती के अनुसार, बप्पा रावल नागदा शहर के पास बड़े हुए थे। अदम्य विंध्य पर्वतमाला के बीच एक युवा के रूप में बप्पा के शुरुआती वर्षों के बारे में कई कहानियां हैं, क्योंकि अधिकांश उच्च उत्साही शासकों के लिए हैं। उनके मज़ाक में गाँव की युवतियों पर स्पष्ट रूप से हानिरहित मज़ाक शामिल थे, हालाँकि यह संभव है कि यह इतना मासूम न हो (वे ब्राह्मणों के पवित्र पशुधन की देखभाल करते थे)। उन्होंने एक दिन अपने द्वारा बनाए गए एक खेल के दौरान कई युवतियों से 'विवाह' किया, जिसके लिए उन्हें युवा लड़कियों के नाराज माता-पिता से बचने के लिए पहाड़ियों में छिपने के लिए नागदा छोड़ना पड़ा। संभावित पौरुष की इस कहानी में एक दिलचस्प मोड़ यह है कि बप्पा रावल ने कई महिलाओं से विवाह किया और सौ से अधिक संतानों के पिता बने।

कहा जाता है कि बप्पा रावल का जन्म 712 और 13 ई. के बीच राजस्थान के आनंदपुरा में हुआ था।[4]हालांकि, उनके जन्म स्थान के रूप में राजस्थान के आनंदपुरा का उल्लेख भी लोककथाओं और कुछ वंशावली स्रोतों में मिलता है, यह विवरण अधिकतर किंवदंती और मौखिक परंपराओं पर आधारित है। यह जानकारी ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रमाणिक रूप में दर्ज नहीं की गई है, क्योंकि इस काल के प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत सीमित और अस्पष्ट हैं। बप्पा रावल के वास्तविक चरित्र के बारे में कुछ अभिलेखीय अस्पष्टता है, क्योंकि शुरुआती मेवाड़ शिलालेखों में उन्हें वंशावली सूचियों में शामिल नहीं किया गया है। 977 ई. के अटपुर शिलालेख में बप्पा रावल का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन वे व्यावहारिक रूप से सभी बाद की सूचियों में दिखाई देते हैं। हालांकि, यह बताता है कि परिवार के आधार को वल्लभी से मेवाड़ ले जाने का प्रभारी व्यक्ति आनंदपुरा से था।[5]यह शिलालेख गुहिला वंश की स्थापना का श्रेय गुहादत्त को देता है। केवल बाद के शिलालेखों और बार्डिक कहानियों में बप्पा रावल को गुहिलमेवार वंश के संस्थापक के रूप में पहचाना जाता है। वे 40 वर्षों (713-753 ई.) तक जीवित रहे, लेकिन विशाल भारतीय परिदृश्य में उनका योगदान निश्चित रूप से उल्लेखनीय और प्रेरणादायक है। उनका जन्म गुहिलोत वंश के नागादित्य और कमलावती के घर कालभोज के रूप में हुआ था, जिसका दावा है कि वे श्री राम के पुत्र लव के वंशज हैं। गुहिलोत-सिसोदिया राजवंश का 1400 साल लंबा संघर्ष बप्पा रावल से शुरू होता है। उनका बचपन दर्द से भरा था। कुछ परिस्थितियों के कारण, उनकी माँ उन्हें एक जंगल में ले गईं जहाँ वे आदिवासी भीलों के साथ बड़े हुए जिन्होंने उनकी देखभाल की। इस प्रकार, आदिवासी भीलों और मेवाड़ शासकों के बीच लंबे समय तक चलने वाले संबंधों का बीज बोया गया।

कई भूमि अनुदान, शिलालेख, सोने के सिक्के और साहित्यिक पाठ बप्पा को कई तरह से संदर्भित करते हैं - बप्प, बप्पाक, बप्पाई, बापा आदि। इतिहासकारों ने अनुमान लगाया है कि बप्पा एक उचित नाम के बजाय एक पदनाम हो सकता है। इस दृष्टिकोण की पुष्टि मेवाड़ इतिहास के प्रकांड विद्वान कविराज श्यामलदास ने अपनी पुस्तक 'वीर विनोद' में की है।[6] 'बप्पा' नाम कई व्यक्तियों पर उनके पैतृक और वीरतापूर्ण गुणों के सम्मान के लिए भी लागू किया जा सकता था। 'रावल' शब्द का अर्थ है छोटा राजकुमार, और यह इदर में एक राजकुमार के रूप में मोरी साम्राज्य के भीतर उनकी प्रारंभिक स्थिति की ओर इशारा करता है। ऐसी कई किंवदंतियाँ हैं जो 'रावल' उपाधि को अपनाने की व्याख्या करना चाहती हैं। उनमें से एक का सुझाव है कि बप्पा की माँ ने अपनी स्थानीय देवी से प्रार्थना की, जिन्होंने उन्हें वरदान दिया कि उनका बेटा एक बहुत ही मेहनती और साहसी शासक बनेगा। इसी कारण से उन्होंने अपनी उपाधि बदलकर 'रावल' रख ली। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 'रावल' शब्द किसी भी वीर राजपूत योद्धा के लिए उपयुक्त है, और यह विशेषण बप्पा के व्यक्तित्व के लिए उपयुक्त है, जो एक साहसी योद्धा थे। [संदर्भ] ऐसा माना जाता है कि बप्पा रावल नगाड़ा की पहाड़ियों में भेष बदलकर रहे, जहाँ उन्होंने इदर के भीलों के साथ मुठभेड़ में अपने पिता को खो दिया था। वास्तव में, सभी पुरुष सदस्यों में से वे अकेले ही अपने परिवार पर आई विपत्ति से बच पाए। उनका पालन-पोषण नगाड़ा की एक ब्राह्मण महिला ने किया, जिसके लिए वे गाय चराते थे। इस दौरान, उनके साथ दो वफादार भील अनुयायी थे, और जब बप्पा ने अधिकार प्राप्त किया, तो इन वफादार साथियों को ओगुना और उंद्री गाँवों की जागीरें दी गईं।एक राजकुमार के रूप में, बप्पा ने भील समुदाय के लोगों द्वारा बसाए गए बीहड़ों पर शासन किया, और इसने उन्हें युद्ध कौशल से लैस किया, जो एक योद्धा के रूप में उनके भविष्य में बहुत उपयोगी साबित हुआ। उन्हें कुछ भीलों से समर्थन मिला, जिनमें से बलेओ और देवा के नाम विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। बलेओ को बप्पा के माथे पर संप्रभुता का टीका लगाने के लिए जाना जाता है। [7]

मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास व्यवस्थित रूप में उपलब्ध नहीं है। वीर योद्धाओं को जन्म देने वाली मेवाड़ की भूमि राजसी प्रतिष्ठा, मर्यादा और गौरव की प्रतीक और संबल रही है। मेवाड़ अपनी समृद्धि, परंपरा, अद्भुत शौर्य और अनूठी कलात्मक अभिव्यक्तियों के कारण विश्व पटल पर चमकता रहा है। रावल बप्पा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप जैसे वीर, यशस्वी, कर्मठ, देशभक्त और स्वतंत्रता प्रेमी व्यक्तित्वों को जन्म देने वाली मेवाड़ की इस भूमि ने मेवाड़ ही नहीं, बल्कि पूरे भारत को गौरवान्वित किया है। श्री गौरीशंकर ओझा ने अपनी पुस्तक 'मेवाड़ राज्य का इतिहास' में मेवाड़ के सभी शासकों के नाम और क्रम प्रामाणिक रूप से दिए हैं।[8] मेवाड़ का राजवंश पहले सूर्यवंशी, फिर गुहिला और फिर सिसोदिया के नाम से जाना जाता था।कर्नल टॉड ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का

---

[3]समरसिम्हा का चित्तौड़गढ़ शिलालेख, 1271 ई., जी.एच. ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ. 176.

[4]शालू अग्रवाल.बप्पा रावल अन्नदाता की जीवन उपलब्धि यां इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर) ई-आईएसएसएन: 2582-2160, 2023. पृष्ठसंख्या 1.

[5]टॉड्स एनाल्स ऑफ मेवाड़, जेम्स टॉड द्वारा, रूपा एंटीक्विटीज, आईएसबीएन 8129120372

[6]दधवाड़िया, श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ 239 ।

[7]खन्ना, जी. राजस्थान के इतिहास में मेवाड के शासक के रूप में बप्पा रावल का प्रबंधन।

[8]गौरी शंकर ओझा, उदयपुर राज्य इतिहास, वैदिक मंत्रालय अजमेर, 1993, पृष्ट 212-219

इतिहास' में मेवाड़ के महाराणाओं को श्री राम के पुत्र 'लव' का वंशज बताया है, जबकि मेवाड़ के महाराणा 'कुश' (श्री राम के ज्येष्ठ पुत्र) के वंशज हैं।श्रीमद्भागवत के अनुसार राम के वंश का अंतिम राजा सुमित्रा था। सुमित्रा के बाद सूर्यवंशी राजाओं का वृत्तांत किसी पुराण में नहीं मिलता। [9]

कर्नल टॉड ने अनेक जैन लेखोंकी जांच के बाद अपनी पुस्तक (राजस्थान का इतिहास) में लिखा है कि गुहिल राजपूतों ने दूसरी शताब्दी के मध्य के बाद कभी वल्लभीपुर की स्थापना की या उस पर कब्जा किया। वल्लभीपुर राजवंश की स्थापना 'कनकसेन' ने की थी, जो श्रीराम के कई पीढ़ी बाद पैदा हुए थे। कनकसेन की चौथी पीढ़ी में पैदा हुए विजयसेन ने विजयपुर, वल्लभीपुर, विदर्भ आदि कई नगरों की स्थापना की। इस वंश का अंतिम राजा शिलादित्य षष्ठ था, जिसके शासनकाल में जंगली लोगों (जो संभवतः मुसलमान थे) ने वल्लभीपुर को घेर लिया और शिलादित्य षष्ठ मारा गया। वल्लभी के अंतिम शासक शिलादित्य षष्ठ का अंतिम दान पत्र (अलीना का पत्र) वल्लभी संवत 447 का है और वल्लभी राजवंश का शासनकाल 240 वर्षों तक चला।

इस शोध का उद्देश्य बप्पा रावल द्वारा मेवाड़ की स्थापना का विश्लेषण करना है:

1. 8वीं शताब्दी में बप्पा रावल के सत्ता में आने से जुड़ी ऐतिहासिक घटनाओं की जांच करना, जिसमें चित्तौड़गढ़ पर उनका कब्ज़ा और मेवाड़ साम्राज्य की स्थापना शामिल है।
2. बप्पा रावल की सैन्य और राजनीतिक रणनीति का विश्लेषण करना और उन रणनीतियों और गठबंधनों का पता लगाना, जिन्होंने बप्पा रावल को अपनी शक्ति को मजबूत करने, बाहरी आक्रमणों का विरोध करने और मेवाड़ में एक गढ़ स्थापित करने में मदद की, जिससे भविष्य के राजपूत राज्यों की नींव रखी गई।

उत्तर भारत में 8वीं शताब्दी हर्ष जैसे बड़े साम्राज्यों के पतन और प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट जैसी कई क्षेत्रीय शक्तियों के उदय से चिह्नित थी। ये राजवंश जटिल संघर्षों में लगे रहे, विशेष रूप से त्रिपक्षीय संघर्ष, जिसने उस समय के राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया। उसी समय, राजपूत वंश उभरने लगे, जिसमें बप्पा रावल जैसे व्यक्ति अगली शताब्दियों में शक्तिशाली राजपूत राज्यों के उदय के लिए मंच तैयार कर रहे थे।भारतीय उपमहाद्वीप में अरबों का विस्तार 7वीं शताब्दी में शुरू हुआ और 8वीं शताब्दी की शुरुआत में, उमय्यद खलीफा ने 711 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में सिंध पर विजय प्राप्त कर ली थी।[10] अरब सेनाओं ने उत्तर भारत में आगे बढ़ने का प्रयास किया, लेकिन उन्हें भारतीय राजाओं, विशेष रूप से प्रतिहारों के गठबंधन द्वारा खदेड़ दिया गया, जिन्होंने राजस्थान की लड़ाई (738 ई.) में भारत की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस लड़ाई ने उत्तरी भारत में अरबों के विस्तार की सीमा को चिह्नित किया।

बप्पा रावल के प्रारंभिक जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना, जिसका वर्णन अक्सर किंवदंतियों में किया जाता है, में हरित ऋषि से उनकी मुलाकात शामिल है, माना जाता है कि ऋषि ने बप्पा के महान शासक बनने की क्षमता को पहचाना था। कहा जाता है कि हरित ऋषि ने बप्पा रावल को अपने संरक्षण में लिया था और माना जाता है कि उनके संरक्षण में बप्पा ने आध्यात्मिक और युद्ध कौशल दोनों विकसित किए थे। माना जाता है कि ऋषि ने उन्हें दिव्य शक्तियों का आशीर्वाद दिया और विदेशी आक्रमणकारियों से अपनी भूमि की रक्षा करने के लिए एक नेता के रूप में उभरने के लिए प्रोत्साहित किया।[11] किंवदंतियों के अनुसार, बप्पा ने एकलिंगजी (भगवान शिव) से भी आशीर्वाद प्राप्त किया, जो मेवाड़ के संरक्षक देवता बन गए। मेवाड़ में बप्पा रावल से जुड़ा एकलिंगजी मंदिर इस संबंध के धार्मिक महत्व को दर्शाता है, जिसमें मेवाड़ के भावी शासक खुद को एकलिंगजी के संरक्षक मानते थे। [12]माना जाता है कि एक युवा व्यक्ति के रूप में, बप्पा रावल उस समयचित्तौड़गढ़के शासक परिवार, मोरी राजवंश की सेवा में शामिल हो गए थे। स्थानीय राजवंश मोरिस ने चित्तौड़गढ़ पर नियंत्रण किया, लेकिन आंतरिक कलह और बाहरी खतरों के कारण उनका प्रभाव कम होता जा रहा था।[13]बप्पा की वीरता और युद्ध कौशल ने उन्हें मोरी दरबार में एक प्रमुख स्थान दिलाया। उनका उत्थान तेजी से हुआ और उन्होंने मोरी राजा का विश्वास प्राप्त किया, कथित तौर पर उनके प्रमुख सैन्य कमांडरों में से एक बन गए।

मोरियन की हार और चित्तौड़गढ़ पर कब्ज़ा

चित्तौड़गढ़, ऐतिहासिक रूप से भारत के सबसे प्रमुख किलों में से एक है, जो रणनीतिक और प्रतीकात्मक दोनों रूप से अत्यधिक महत्व रखता है। चित्तौड़गढ़ किला 180 मीटर ऊंची पहाड़ी के ऊपर स्थित है और लगभग 700 एकड़ के क्षेत्र में फैला है, जो इसे एक प्राकृतिक किला बनाता है[14] जिसे भेदना मुश्किल था। इसकी ऊँची स्थिति ने एक मजबूत दृष्टिकोण प्रदान किया, जिससे शासकों को आक्रमणों से बचाव करने में मदद मिली। यह भारत के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों को जोड़ने वाले महत्वपूर्ण व्यापार और सैन्य मार्गों के साथ रणनीतिक रूप से स्थित था। इसके नियंत्रण ने आसपास के मैदानों पर प्रभुत्व और पानी, कृषि भूमि और व्यापार जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों तक पहुंच सुनिश्चित की। इसके अलावा किला मेवाड़ और व्यापक राजपुताना क्षेत्र के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता था।

---

[9]द एनल्स ऑफ मेवाड़, जेम्स टॉड द्वारा; सी.एच. पेन द्वारा संपादित, पृष्ठ. [7-8], रूपा एंटीक्विटीज, आईएसबीएन 8129120372

[10]हमीदी, टी.एच. (1997). दक्षिण पूर्वी सिंध में मुहम्मद बिन कासिम का प्रवेश मार्ग. जर्नल ऑफ द पाकिस्तान हिस्टोरिकल सोसाइटी, 45(4), पृष्ठ। 337-345

[11]श्याम सुंदर भट्ट, मेवाड़ के संस्थापक बाप्पा रावल एवं उनके गुरु महर्षि हारीत राशि, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज, वॉल्यूम 4–7, मई 2021, पृष्ठ 5 ।

[12]लियोन्स, टी. (1999). एकलिंगजी के बदलते चेहरे: एक राजवंशीय तीर्थस्थल और उसके कलाकार। आर्टिबस एशिया, पृष्ट 253-271।

[13]लखानी, एस. राजपुताना का इतिहास: राजपूतों की वीरता, बलिदान और ईमानदारी।

[14]राजपुताना गजेटियर्स. खंड II-A मेवाड़ रेजीडेंसी

चित्तौड़गढ़ पर नियंत्रण करने से शासकों को अरावली पर्वतमाला के माध्यम से आंदोलनों की निगरानी और प्रबंधन करने की अनुमति मिली।

अधिकांश विद्वानों का मानना है कि चित्तौड़ बहुत पहले से ही गुहिलोत साम्राज्य का हिस्सा था। इस प्रसिद्ध किले पर कब्ज़ा करने का श्रेय परंपरा के अनुसार मेवाड़ के राणाओं के पूज्य पूर्वज बप्पा को दिया जाता है। महाराणा राजसिंह के समय के राजसमुद्र शिलालेख, दिनांक 1674 ई. में दर्ज है कि बप्पा ने हरितरासी की कृपा प्राप्त करके मोरी राजा मनुराजा से चित्रकूट (चितौड़) पर विजय प्राप्त की और रावल की उपाधि धारण की।[15] यही कहानी मारवाड़ के महाराजा यशवंतसिंह के दीवान मुहणोता नोइनासी (1610-1670) के इतिहास और टॉड के इतिहास और राजस्थान के पुरावशेषों के पन्नों में दोहराई गई है। बाद के अधिकार हमें यह भी बताते हैं कि बप्पा ने मोरी राज्य पर हमला करने वाले विदेशियों की भीड़ को खदेड़ने के बाद चित्तौड़ पर हमला किया था। 713 ई. के एक शिलालेख से यह साबित होता है कि उस समय चित्तौड़ पर मालवा के राजा माना का कब्जा था। एक लोकप्रिय विवरण के अनुसार, चित्तौड़गढ़ पर एक अरब जनरल ने हमला किया था, जो संभवतः उमय्यद या अब्बासिद आक्रमणों से जुड़ा था, जिन्होंने पहले ही सिंध पर विजय प्राप्त कर ली थी। आगामी संघर्ष में, बप्पा रावल ने किले की रक्षा में निर्णायक भूमिका निभाई। हालाँकि, इस संघर्ष के दौरान मोरी राजा या तो मारे गए या कमजोर हो गए, और बप्पा रावल ने 728 ई. के आसपास चित्तौड़गढ़ पर नियंत्रण करने का अवसर जब्त कर लिया। कुछ स्रोतों से पता चलता है कि उन्हें या तो मोरी बचे लोगों द्वारा सिंहासन लेने के लिए आमंत्रित किया गया था या उन्होंने अपनी सैन्य सफलता के माध्यम से इसका दावा किया था। कहानी के अन्य संस्करणों से पता चलता है कि बप्पा रावल ने चित्तौड़गढ़ पर बलपूर्वक कब्जा नहीं किया, बल्कि मोरी परिवार में विवाह किया, जिससे सिंहासन पर उनका दावा मजबूत हुआ।

734 में चित्तौड़गढ़ पर कब्ज़ा करने के बाद, बप्पा रावल ने खुद को मेवाड़ का शासक घोषित किया और गुहिलोत राजवंश के शासन की नींव रखी।[16] चित्तौड़गढ़ पर उनके नियंत्रण ने न केवल क्षेत्र पर उनके अधिकार को मजबूत किया, बल्कि मेवाड़ के एक शक्तिशाली राजपूत साम्राज्य में परिवर्तन की शुरुआत भी की।बप्पा रावल को अक्सर चित्तौड़गढ़ को मजबूत करने और आसपास के क्षेत्रों पर इसके प्रभाव का विस्तार करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने पड़ोसी राजपूत कुलों के साथ गठबंधन बनाए और बाहरी आक्रमणों के खिलाफ़ मेवाड़ की स्थिति को मजबूत किया।

उनके राज्यारोहण ने सिसोदिया राजवंश (उनके वंशजों के नाम पर) की शुरुआत को भी चिह्नित किया, जो राजस्थान में सबसे शक्तिशाली और स्थायी राजवंशों में से एक बन गया।

बप्पा रावल के शासन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उत्तर-पश्चिमी भारत में अरबों के शुरुआती आक्रमणों के खिलाफ़ उनकी सफल रक्षा थी। 711 ई. में मुहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर विजय प्राप्त करने के बाद, अरब सेनाओं ने भारत में आगे बढ़ने के अपने प्रयास जारी रखे। बप्पा रावल को इन आक्रमणों को पीछे हटाने का श्रेय दिया जाता है, खासकर राजस्थान और गुजरात में, प्रतिहार जैसे अन्य राजपूत शासकों के साथ मिलकर। अरबों पर उनकी जीत ने भारत को आगे के आक्रमणों से बचाने में मदद की।

अरबों के खिलाफ बप्पा रावल के सैन्य अभियान उनकी सबसे प्रसिद्ध उपलब्धियों में से एक हैं। हालाँकि विशिष्ट युद्धों के विस्तृत रिकॉर्ड विरल हैं, लेकिन ऐतिहासिक और पौराणिक विवरण बताते हैं कि बप्पा रावल ने अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ सफल सैन्य अभियान चलाए और उन्हें राजस्थान और गुजरात में आगे बढ़ने से रोका। शिवाजी की तरह, बप्पा रावल भी एक अत्यंत धार्मिक व्यक्ति थे और वे भारत के नए आक्रमणकारियों से भी उतनी ही नफरत करते थे जो गौ-हत्यारे थे। सिंध में अपने आधार से, जिसे उन्होंने 712 ए डी में जीत लिया था, अरबों ने भारत के दक्षिण और पूर्व में अतिक्रमण करना शुरू कर दिया था। उन्होंने चित्तौड़ के राजाओं के राज्य पर हमला किया था, जो, जैसा कि खंड I में कहा गया है, सिंध के साहसी राजा के रिश्तेदार थे और जिन्होंने चाचा द्वारा हड़पे जाने पर उस राज्य पर दावा भी किया था। रेगिस्तानों को पार करना अरबों के लिए एक कठिन काम नहीं था और उन्होंने चित्तौड़ को बड़ी ताकत से परेशान करना शुरू कर दिया था। वास्तव में हम इसे 739-740 ए डी के नवश्री चालुक्य अनुदान के शिलालेख में दर्ज पाते हैं[17] कि अरबों ने मौर्य (आवश्यक रूप से चित्तौड़ के) के साथ-साथ चावोटक, कच्छ और अन्य राज्यों पर हमला किया था। बप्पा रावल शिव के एक महान भक्त थे, जिनकी एकलिंग प्रतिमा नागदा के पास थी और वे वहां रहने वाले प्रसिद्ध शैव ऋषि हर्लता के शिष्य थे। हमें अचलगढ़ और अन्य शिलालेखों में दी गई कहानी पर विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है कि हर्लता ने बप्पा की महानता की भविष्यवाणी की थी और उन्हें उनकी समर्पित सेवाओं के बदले में संप्रभुता का संकेत देने वाली सोने की पायल दी थी। लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि हर्लता ने अपने शिष्य में निहित महानता को देखा और उसे चित्तौड़ जाने, राजा की सेवा में शामिल होने और काफिरों, मूर्तियों को तोड़ने वालों और गायों के हत्यारों से लड़ने की सलाह दी। तदनुसार बप्पा ने अपने कुल के लोगों और भीलों के साथ मोरी राजा की सेवा ली (शायद वह पहले से ही उस राजा का सरदार था) और जल्द ही वह महत्वपूर्ण बन गया और उसे बार-बार होने वाले अरब आक्रमणों को रोकने के लिए नियुक्त बलों का नेता चुन लिया गया, पेरिस के महल के मेयर चार्ल्स मार्टेल की तरह, बप्पा शायद अरबों का विरोध करने वाली मोरी सेनाओं के सेनापति थे और चार्ल्स मार्टेल की तरह बप्पा ने भी उन पर एक महत्वपूर्ण जीत हासिल की थी। स्वाभाविक रूप से उसकी ख्याति अब पहले से कहीं अधिक बढ़ गई थी हम इस किंवदंती पर विश्वास नहीं करते कि इसके बाद चित्तौड़ के सरदारों ने विद्रोह कर दिया और चित्तौड़ के मोन राजा को पदच्युत करके बप्पा के सिर पर ताज रख दियाI बप्पा ने अरबों को हराकर जो प्रसिद्धि और शक्ति अर्जित की थी, उससे जीर्ण-शीर्ण मोरी राजा को हटाकर खुद को राजा बना लिया होगा; लेकिन हम यह मानना पसंद करते हैं कि चितोड़ के तत्कालीन मोरी राजा की मृत्यु सिंध के साहसी या मराठा इतिहास में सतारा के शाहू की तरह निःसंतान हुई और बप्पा सिंध के चाचा या पूना के पेशवा नानासाहेब की तरह चितोड़ के राजा बन गए। क्रांति की प्रकृति चाहे जो भी रही हो, यह निश्चित है कि मोरी वंश समाप्त हो गया और मुसलमानों के विजेता बप्पा ने

---

[15]किबे, एन. वी., और किबे, एम. वी. (1941, जनवरी)। 734 ई. में बप्पा रायल द्वारा चित्तौड़ की विजय (सारांश)। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही में (खंड 5, पृष्ठ 255–256)।

[16]राम, बी., और चौहान, जे.एस. ऐन अस्सेस्मेंट ऑफ़ इकनोमिक सिचाटों ऑफ़ मेवाड़। इंडियन कार्टोग्राफर, पृष्ठ 395 ।

[17]बॉम्बे गजेटियर खंड I भाग I, पृष्ठ 465

चितोड़ में राजाओं की एक शानदार वंशावली की स्थापना की, जो बारह शताब्दियों के बाद आज भी कायम है। यह भी वैसा ही था जैसा फ्रांस में हुआ था, जहां चार्ल्स मार्टेल अपने पोते चार्ल्स द ग्रेट के माध्यम से राजाओं की एक प्रसिद्ध और लंबी वंशावली के पूर्वज बने। एक पौराणिक विवरण में कहा गया है कि बप्पा रावल ने अरब आक्रमणकारियों को पीछे हटाने के लिए एक और शक्तिशाली राजपूत साम्राज्य, प्रतिहार राजवंश के साथ गठबंधन किया था। साथ में, वे अरबों को उत्तर-पश्चिमी भारत में आगे बढ़ने से रोकने में कामयाब रहे, जिससे इस क्षेत्र की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता बनी रही। अरब आक्रमणों के इस प्रतिरोध ने न केवल मेवाड़ की सीमाओं को सुरक्षित किया, बल्कि बप्पा रावल को एक वीर व्यक्ति के रूप में स्थापित किया, जिन्हें विदेशी आक्रमणकारियों के खिलाफ भारतीय सभ्यता की रक्षा के लिए जाना जाता है। अरबों की हार ने भारत में उनके आगे विस्तार को रोक दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि उत्तर-पश्चिमी भारत भारतीय शासकों के नियंत्रण में रहे। इसने भारतीय उपमहाद्वीप के रक्षक के रूप में मेवाड़ की प्रतिष्ठा को मजबूत किया, एक ऐसा विषय जो सदियों तक गूंजता रहेगा, खासकर बाद में दिल्ली सल्तनत और मुगलों जैसे अन्य आक्रमणकारियों के खिलाफ राजपूत प्रतिरोध के संदर्भ में।[18]

मेवाड़ की स्थिति को सुरक्षित करने में मदद करने वाले सबसे महत्वपूर्ण गठबंधनों में से एक प्रतिहार राजवंश के साथ था, जो एक और शक्तिशाली राजपूत वंश था जिसने उत्तरी भारत के बड़े हिस्से को नियंत्रित किया था। नागभट्ट प्रथम जैसे शासकों के अधीन प्रतिहारों ने विदेशी आक्रमणों, विशेष रूप से उमय्यद खलीफा से भारत की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।बप्पा रावल के प्रतिहारों के साथ गठबंधन ने अरब आक्रमणकारियों के खिलाफ एक एकीकृत मोर्चा बनाने की अनुमति दी और मेवाड़ को इस क्षेत्र में अपनी शक्ति को मजबूत करने में भी मदद की। प्रतिहार अपनी सैन्य शक्ति के लिए जाने जाते थे, और उनके समर्थन ने राजपूत कुलों के बीच बप्पा रावल की स्थिति को मजबूत किया।[19]

इस गठबंधन ने राजपूत राज्यों के बीच भविष्य के सहयोग के लिए आधार तैयार किया, जो अक्सर बाहरी खतरों का विरोध करने के लिए एक साथ आते थे, चाहे वे इस्लामी आक्रमणकारियों या अन्य क्षेत्रीय शक्तियों से हों। इसने राजपूत एकता की व्यापक भावना स्थापित करने में मदद की, जो बाद की शताब्दियों में उनकी राजनीतिक और सैन्य रणनीति का एक महत्वपूर्ण तत्व बन गया। इस साझेदारी के माध्यम से राजपूताना क्षेत्र में मेवाड़ की स्थिति मजबूत हुई, जिससे पारस्परिक सैन्य सहायता मिली और बाहरी आक्रमणों से दोनों राज्यों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई। इस गठबंधन ने मेवाड़ को पड़ोसी राजपूत राज्यों के साथ सीधे संघर्ष के बिना अपने प्रभाव का विस्तार करने की अनुमति दी, जिससे सापेक्ष स्थिरता और विकास की अवधि संभव हुई।

सैन्य गठबंधनों के अलावा, माना जाता है कि बप्पा रावल ने अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए वैवाहिक गठबंधनों का उपयोग किया था। कुछ खातों के अनुसार, उन्होंने मोरी राजवंश में विवाह किया, इस प्रकार मोरी शासकों को हराने के बाद चित्तौड़गढ़ पर वैधता प्राप्त की।

इन गठबंधनों ने बप्पा रावल को मेवाड़ पर अपनी पकड़ मजबूत करने और विभिन्न राजपूत कुलों की वफादारी हासिल करने में मदद की। खुद को अन्य शक्तिशाली परिवारों के साथ जोड़कर, वह समर्थन का एक मजबूत नेटवर्क बनाने में सक्षम था जो क्षेत्र पर अपने अधिकार को बनाए रखने में महत्वपूर्ण साबित होगा। इस तरह के गठबंधन राजपूत राज्यों में एक आम राजनीतिक रणनीति थी और मेवाड़ की राजवंशीय निरंतरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये वैवाहिक संबंध मेवाड़ के भावी शासकों को अन्य राजपूत वंशों के साथ गठबंधन बनाने में मदद करेंगे, जिससे वे दिल्ली सल्तनत और मुगलों जैसी बड़ी ताकतों का विरोध करने में सक्षम होंगे। इन गठबंधनों ने बप्पा रावल के शासन को वैध बनाने और अन्य शासक राजवंशों के साथ संबंधों को मजबूत करने में मदद की, जिससे मेवाड़ के लिए अधिक स्थिरता सुनिश्चित हुई। उन्होंने पड़ोसी राजपूत वंशों के बीच शांति की सुविधा भी दी, जिससे आंतरिक संघर्षों की संभावना कम हो गई और बप्पा रावल को बाहरी खतरों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति मिली।

चित्तौड़गढ़ के एकीकरण के बाद, बप्पा रावल ने छोटे स्थानीय शासकों को वश में करके और उनके क्षेत्रों को अपने राज्य में एकीकृत करके मेवाड़ के क्षेत्र का विस्तार किया। उनका शासन आधुनिक राजस्थान के एक बड़े हिस्से तक फैला हुआ था, और उनका प्रभाव गुजरात तक महसूस किया गया था। ये विजय मेवाड़ की आर्थिक और सैन्य ताकत के लिए महत्वपूर्ण थीं। प्रमुख व्यापार मार्गों और उपजाऊ क्षेत्रों को नियंत्रित करके, बप्पा रावल ने सुनिश्चित किया कि मेवाड़ एक समृद्ध और आत्मनिर्भर राज्य बने। उनके सैन्य अभियानों और क्षेत्रीय एकीकरण ने भी मेवाड़ को एक ऐसी ताकत के रूप में स्थापित किया, जिसका सामना करना पड़ता था, और बाद में राजपूत शासकों ने राज्य के प्रभाव को और भी आगे बढ़ाने के लिए इस नींव पर निर्माण किया।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि चित्तौड़गढ़ पर कब्ज़ा करने से इस क्षेत्र में मेवाड़ के प्रभुत्व की नींव रखी गई, जबकि प्रतिहारों के साथ रणनीतिक गठबंधन और विवाह के माध्यम से बप्पा रावल के शासन को मजबूती मिली। बप्पा रावल द्वारा मेवाड़ की स्थापना एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने राजस्थान के राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक ढांचे को स्थायी रूप से प्रभावित किया। उनकी वीरता, रणनीतिक कुशलता, और एकलिंगजी के प्रति गहरी आस्था ने मेवाड़ को न केवल एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया, बल्कि राजपूत समाज में धर्म और शौर्य की परंपरा को भी मजबूत किया। बप्पा रावल की विरासत ने मेवाड़ को सदियों तक विदेशी आक्रमणों के खिलाफ खड़ा रहने वाली शक्ति बना दिया, और उनका योगदान राजपूत गौरव, स्वतंत्रता और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बन गया। बापा इस राज्य के वास्तविक संस्थापक थे, क्योंकि उनके पूर्ववर्तियों को पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में अरावली की सीमा से लगे जंगली क्षेत्र में सीमित शक्तियां प्राप्त थीं, लेकिन उन्होंने चित्तौड़ और पड़ोसी क्षेत्र पर कब्जा करके पूर्व की ओर अपने अधिकार का विस्तार किया I कहा जाता है कि उनकी मृत्यु 753 में हुई थी।

---

[18]मूल मिथकों का अध्ययन: मेवाड़ के इतिहास में गुहिलों की स्थिति (सातवीं से तेरहवीं शताब्दी)। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्य वाही, 52, 63–71।

[19]सिंह, जे.पी. (1965). मेवाड़ के गुहिला राजवंश (लगभग 550–1303 ई.) यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन, स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीक न स्टडीज (यूनाइटेड किंगडम) ।

संदर्भ सूची

1. किबे, एन. वी., और किबे, एम. वी. (1941, जनवरी)। 734 ई. में बप्पा रायल द्वारा चित्तौड़ की विजय (सारांश)। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही में (खंड 5, पृष्ठ 255-256)।
2. खन्ना, जी. राजस्थान के इतिहास में मेवाड के शासक के रूप में बप्पा रावल का प्रबंधन।
3. गौरी शंकर ओझा, उदयपुर राज्य इतिहास, वैदिक मंत्रालय अजमेर, 1993, पृष्ट 212-219
4. टॉड्स एनाल्स ऑफ मेवाड़, जेम्स टॉड द्वारा, रूपा एंटीक्विटीज, आईएसबीएन 8129120372
5. द एनल्स ऑफ मेवाड़, जेम्स टॉड द्वारा; सी.एच. पेन द्वारा संपादित, पृष्ठ. [7-8], रूपा एंटीक्विटीज, आईएसबीएन 8129120372
6. दधवाड़िया, श्यामलदास, वीर विनोद, भाग-1, पृ 239 । बॉम्बे गजेटियर खंड I भाग I, पृष्ठ 465
7. माथुर, एम.एम. "शानदार मेवाड़।"डेक्कन कॉलेज रिसर्च इंस्टीट्यूट का बुलेटिन, खंड 68/69, 2008, पृष्ठ 277-92। JSTOR, http://www.jstor.org/stable/42931212. 12 सितंबर 2024 को एक्सेस किया गया।
8. मूल मिथकों का अध्ययन: मेवाड़ के इतिहास में गुहिलों की स्थिति (सातवीं से तेरहवीं शताब्दी)। भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, 52, 63–71।
9. राजपुताना गजेटियर्स. खंड II-A मेवाड़ रेजीडेंसी
10. राम, बी., और चौहान, जे.एस. ऐन अस्सेस्मेंट ऑफ़ इकनोमिक सिचाटों ऑफ़ मेवाड़। इंडियन कार्टोग्राफर, पृष्ठ 395 ।
11. रामवल्लभ सोमानी, हिस्ट्री ऑफ़ मेवाड़ फ्रॉम अर्लीस्ट टाइम टू 1751 ए डी, 30 मार्च, 1976, शांतिदेवी मातेश्वरी प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ 41।
12. लखानी, एस. राजपुताना का इतिहास: राजपूतों की वीरता, बलिदान और ईमानदारी।
13. लियोन्स, टी. (1999). एकलिंगजी के बदलते चेहरे: एक राजवंशीय तीर्थस्थल और उसके कलाकार। आर्टिबस एशिया, पृष्ट 253-271।
14. शालू अग्रवाल.बप्पा रावल अन्नदाता की जीवन उपलब्धि यां इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (आईजेएफएमआर) ई-आईएसएसएन: 2582-2160, 2023. पृष्ठसंख्या 1.
15. श्याम सुंदर भट्ट, मेवाड़ के संस्थापक बाप्पा रावल एवं उनके गुरु महर्षि हारीत राशि, इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज, वॉल्यूम 4-7, मई 2021, पृष्ठ 5 ।
16. समरसिम्हा का चित्तौड़गढ़ शिलालेख, 1271 ई., जी.एच. ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, पृ. 176.
17. सिंह, जे.पी. (1965). मेवाड़ के गुहिला राजवंश (लगभग 550-1303 ई.) यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन, स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज (यूनाइटेड किंगडम) ।
18. हमीदी, टी.एच. (1997). दक्षिण पूर्वी सिंध में मुहम्मद बिन कासिम का प्रवेश मार्ग. जर्नल ऑफ द पाकिस्तान हिस्टोरिकल सोसाइटी, 45(4), पृष्ठ। 337-345